Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed)
Journal home page: www.jmsjournals.in, **ISSN: 2454-8367**
Vol. 09, Issue-II, Oct. 2023

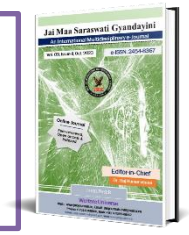

श्री राम जन्मभूमि अयोध्याः एक समीक्षात्मक अध्ययन

(Shri Ram Janmbhoomi Ayodhya: Ek Sameekshatmak Addhyan)

Dr. Saroj Kumari [a,*]
[a]*Senior Research Scholar (SRF), Sanskrit Department, Himanchal Pradesh University, Shimla (H.P.), India- 171005.*

KEYWORDS
राम, पुरी, इक्ष्वाकु, आयुध, अयोध्या, सरयू, सप्तपुरी।

ABSTRACT
भारतीय संस्कृत साहित्य में श्री राम को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में इनके विषय में कई आख्यान ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। ये हिन्दुओं के धर्म सम्बन्धी आख्यान ग्रन्थ हैं। भारत की सभ्यता तथा संस्कृति को जनसाधारण तक पहुँचाने का श्रेय प्राचीन ग्रन्थों को जाता है। इस प्रकार भारतीय धर्म तथा संस्कृति के स्वरूप से हमें प्राचीन ग्रन्थ ही अवगत करवाते हैं।

श्री राम, भगवान् विष्णु जी के सातवें अवतार माने जाते हैं तथा इन्हें श्री राम और रामचन्द्र के नाम से जाना जाता है। रामायण के अनुसार ये एक सूर्यवंशी राजा हैं। सदियों से राम के जीवन को भारतीय ही नहीं अपितु कई देशों की संस्कृतियों में आदर्श एवं पवित्र माना जाता है। भारत देश में अभिवादन के रूप में राम शब्द प्रचलित है। जैसे– राम, राम कहा जाता है। परम्परा के अनुसार जीवन की अन्तिम यात्रा में 'राम' शब्द रूढ़ है ।

प्रस्तावना

भगवान राम जो मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, अखिल ब्रह्मांड के नायक हैं, जिनकी महिमा अनंत है। आदि कवि वाल्मीकि ने जिनके कार्य–कलापों का विस्तृत वर्णन किया है। इस संसार में राम नाम से बढ़कर कुछ नहीं है, स्वयं भगवान शंकर जिनका ध्यान करते हैं। इस कलयुग में ना जप है, ना तप और ना ही योग है। भारत एवं कई अन्य देशों में व्यक्तियों में एक आस्था विद्यमान है कि प्राणीमात्र के लिए केवल 'राम' नाम ही एक मात्र सहारा है क्योंकि 'राम' नाम जप मनुष्य को सब पापों से मुक्ति प्रदान करने वाला है। 'श्री राम' हमारी भारतीय संस्कृति के नायक हैं, उनका निर्मल यश दिशाओं के श्यामल शरीर को भी यश रूपी उज्ज्वलता से चमका देता है। भारतीय मनीषियों ने उन्हें धर्म का अमूर्त रूप कहा है– रामो विग्रहवान धर्मः साधुः सत्यपराक्रमः। अतः हिंदू संस्कृति में 'श्री राम' द्वारा किया गया शासन आदर्श शासन का पर्यायवाची है जो अयोध्या के इतिहास में सर्वदा अमिट और अविस्मरणीय है।

राम शब्द का अर्थ

संस्कृत हिन्दी–कोश के अनुसार रम् धातु में घञ् प्रत्यय के योग से राम शब्द निष्पन्न होता है। रम् धातु का अर्थ रमण (निवास, विहार) से सम्बद्ध है।[1] वे प्राणीमात्र के हृदय में रमण करते हैं, इसलिये वे राम हैं तथा भक्तजन उनमें रमण करते हैं अर्थात् वे राम में ध्याननिष्ठ रहते हैं। रमन्ते कणे–कणे इति राम। हलायुध कोश के अनुसार– रमन्ते इति, रम् + ण रम्यतेऽनेनेति, रम् + घञ् + वा।[2] विष्णुसहस्त्रनाम के अनुसार आदिशंकराचार्य ने पद्म पुराण का उदाहरण देते हुये कहा है कि नित्यानन्द

Corresponding author
***E-mail:** sarojkumarimphil@gmail.com (Dr. Saroj Kumari). https://orcid.org/0000-0002-6925-2770
DOI: https://doi.org/10.53724/jmsg/v9n2.03
Received 09th August 2023; Accepted 20th Sep. 2023; Available online 30th Oct. 2023
2454-8367 /©2023 The Journal. Publisher: Welfare Universe. This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

स्वरूप भगवान् में योगिजन रमण करते हैं, इसलिये वे राम कहलाये जाते हैं।[3] बृहद्धातुकुसुमाकर के अनुसार रमु क्रीडायाम शब्द प्राप्त होता है अर्थात् रमण करना, क्रीडा करना इत्यादि।[4] रमन्ते योगिनो यस्मिन् स रामः[5] अर्थात् जिसमें (ब्रह्म में) योगिजन रमण करते हैं, वह राम हैं। ऐसे अर्थ वाले राम शब्द में रमु क्रीडायाम् धातु से घञ् प्रत्यय (अ) से राम शब्द बना है।

राम शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार राम शब्द में रमु धातु है जिसका अर्थ है– क्रीड़ा करना। रमु में उ की उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से इत् संज्ञा और तस्य लोपः से लोप होकर रम् शब्द शेष रहता है। कृदन्त के हलश्च सूत्र से रम् के साथ घञ् प्रत्यय हुआ। घ का लशक्वतद्धिते से तथा ञ् का हलन्त्यम् सूत्र से इत् संज्ञा होने पर तस्य लोपः से लोप होकर स शेष। जैसे– रम् + अ रम् के र के अ की अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा से उपधा संज्ञा होकर अत उपधाया सूत्र से वृद्धि होकर अ को आ हुआ। जैसे– राम् + अ = राम शब्द बना।[6]

श्री राम का जन्म स्थान (अयोध्या)

श्री राम जन्मभूमि ऐसा स्थान है जहाँ पर भगवान् विष्णु ने सातवें अवतार रूप में जन्म लिया था। यह स्थान भारत के राज्य उत्तर प्रदेश के शहर अयोध्या में है। यहाँ पर भगवान् राम को समर्पित मन्दिर है। यह एक विवादित स्थान है जो हिन्दू और मुस्लिम के बीच है। हिन्दुओं के पवित्र ग्रन्थ रामायण के अनुसार राम का जन्म अयोध्या शहर में हुआ है जो सरयू (घाघरा) नदी के तट पर है। यह नदी अयोध्या से होकर बहती है जिसको राजा दशरथ की राजधानी और राम की जन्मभूमि के रूप में जाना जाता है। रामायण के प्रसंगों में इस नदी (सरयू) का नाम आता है। रामायण के बालकाण्ड में जब श्री राम तथा लक्ष्मण विश्वामित्र जी के साथ शस्त्र विद्या (शिक्षा) ग्रहण करने जा रहे थे तब अयोध्या से सटकर बहती हुयी सरयू नदी जो ब्रह्मसर से निकलने के कारण जो सरयू नदी नाम से प्रसिद्ध है। इस नदी का जल गंगा में मिलता है। इन दो नदियों का जल जब एक–दूसरे से मिश्रित होता है तो बहुत शोर करता है जिसकी तुलना कहीं नहीं हो सकती है और इन नदियों के शोर को तुमुल (तीव्र) ध्वनि नाम दिया है अर्थात् जोर से की गयी भयंकर आवाज। श्री राम ने नदियों के संगम सरयू और गंगा को पार करते हुये उन्हें प्रणाम किया था।[7]

अयोध्या के लिये पुरी शब्द का प्रयोग इसलिये किया जाता है क्योंकि यहाँ पर महान् योद्धाओं, वीर पुरुषों, ने जन्म लिया था। उनके द्वारा अयोध्या शहर को एक विशेष शैली में निर्मित किया गया जो पुर या पुरी कहा गया जिसके कारण अयोध्यापुरी नाम प्रसिद्ध हो गया। शब्दकल्पद्रुम के अनुसार राज्ञांधानी नगरी[8] कहा गया है जिसका अर्थ है– राजा की नगरी। पुर शब्द का अर्थ– शहर या किला होता है। इस शब्द का प्रयोग प्राचीन संस्कृत में हुआ करता था तथा इसे कई वर्षों तक भारतीय शहरों के नाम से जोड़ा जाता था। राजा–महाराजाओं द्वारा प्राचीनकाल में अपने राज्य की राजधानी तथा महत्त्वपूर्ण शहरों को पुर शब्द से सम्बोधित किया जाता था। उसी प्रकार अयोध्यापुरी नाम भी एक महत्त्वपूर्ण शहर है।

किसी शहर के नाम के लिये पुर शब्द आता है। पुरी, नगरी, पत्तन, पुट भेदन, स्थानीय तथा निगम।[9] राजधानी शब्द का प्रयोग प्राचीन ग्रन्थों में प्रायः राजाओं की प्रधान नगरी के अर्थ में होता था। जैसे– रघुवंश के अनुसार इक्ष्वाकु राजाओं की नगरी अयोध्या थी जिसे उनकी राजधानी कहा गया है।[10]

महाकाव्यों में धनुष बाण को प्रमुख स्थान प्राप्त था क्योंकि इसी काल में धनुर्विद्या का पूर्ण विकास हो चुका था तथा इसी काल में महान् धनुर्धर हुये जैसे– राम,

अर्जुन, भीम तथा द्रोण जिनके कोदण्ड, गाण्डीव, वायव्य तथा आंगिरस नामक धनुष थे जिनके द्वारा उन्होंने विभिन्न युद्ध विजयी प्राप्त किये। अर्थात् धनुष एक प्रकार का आयुध है। महान् वीर योद्धाओं के लिये एक अस्त्र जिससे वह युद्ध करते थे। अतः आयुध शस्त्र का प्रतीक है और अयोध्या नाम आयुध से ही पड़ा है क्योंकि आयुध (शस्त्र) धारण करना क्षत्रिय का धर्म था। जैसे– इक्ष्वाकु वंश एक क्षत्रिय वंश था जिसमें श्री राम एक महान् योद्धा हुये जो विष्णु के अवतार थे जिन्होंने युद्ध के लिये धनुष–बाण आयुध का प्रयोग किया था।[11]

रामायण में विश्वामित्र द्वारा राम और लक्ष्मण को विभिन्न दिव्यास्त्रों की शिक्षा देने के सन्दर्भ में भी जानकारी प्राप्त होती है।[12] जिससे स्पष्ट होता है कि श्री राम तथा लक्ष्मण ने विश्वामित्र जी से धनुर्विद्या की शिक्षा प्राप्त की थी तथा रामायण काल में शस्त्र विद्या एक गुरु के द्वारा सिखायी जाती थी।

अयोध्यापुरी एक ऐसा स्थान था जो देवलोक में तप से प्राप्त हुये सिद्धों के विमान की भान्ति श्रेष्ठ था। यहाँ के महल अच्छे ढंग से बनाये गये थे, उनके भीतरी भाग बहुत सुन्दर थे तथा श्रेष्ठ लोग उस पुरी में रहते थे।[13] तीन योजन के विस्तार वाली अयोध्या में दो योजन भूमि ऐसी थी जहाँ पर किसी के लिये भी पहुँचना तथा युद्ध करना सम्भव नहीं था, इसी कारण वह पुरी अयोध्या (न युद्ध)– इस नाम को सत्य सार्थक सिद्ध करती थी, जिसमें रहकर राजा दशरथ अपने राज्य का पालन करते थे।[14] अर्थात् अयोध्यापुरी कोई साधारण नगरी नहीं थी। यहाँ पर किसी भी शत्रु का प्रवेश कर पाना सम्भव नहीं था क्योंकि इस पुरी का निर्माण सुनियोजित ढंग से किया गया था।

यदि श्री राम के जन्म के प्रसंग की बात की जाये तो ऋषियों, महर्षियों तथा तत्त्वज्ञों को ज्ञात था कि राजा दशरथ के घर में परम पुरुष भगवान् विष्णु जी ही राम रूप में अवतार लेंगे। विष्णु जी ने अपने विराट् जन्म की परिस्थिति को सूचित करने वाली ग्रह स्थिति का निर्माण किया था जिसमें पाँच ग्रह– सूर्य, मंगल, शनि, गुरु और शुक्र अपने–अपने उच्च स्थान में विद्यमान थे इसके अतिरिक्त लग्न में चन्द्रमा के साथ बृहस्पति विद्यमान थे।[15]

श्री राम का जन्म अयोध्या में हुआ था। अयोध्या को सप्तपुरियों में से एक माना है। जैसे– अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका ये सात पवित्र स्थल हैं जो मोक्ष के लिये जाने जाते हैं।[16] सरयू नदी अयोध्या के तीर पर स्थित है। इस नदी का उल्लेख ऋग्वेद में प्राप्त होता है। भूगोल के अनुसार घाघरा नदी सरयू नदी को ही कहा गया है।[17] महाभारत के अनुसार हिमालय के स्वर्ण शिखर से सरयू (घाघरा) उद्भूत है तथा गंगा की ही सात धाराओं में से एक है।[18]

श्री राम का जन्म रामनवमी के नाम से मनाया जाता है। चौत्र शुक्ल नवमी जिस दिन मध्याह्न काल में श्री रामचन्द्र का जन्म हुआ था। इस तिथि को हिन्दू व्रत तथा जन्मोत्सव मनाते हैं। दूसरे दिन दशमी को विसर्जन कर पारायण का विधान है।[19]

राम जन्मभूमि का नाम उस स्थान को दिया गया है जहाँ राम का जन्म हुआ। रामायण के अनुसार यह स्थान अयोध्या नामक शहर में सरयू नदी के किनारे है। हिन्दुओं के अनुसार यह स्थान राम की जन्मभूमि है जहाँ पर बाबरी मस्जिद बना दी गयी थी। मुगलों ने इस स्थान को चिह्नित करने वाले एक हिन्दू मन्दिर को ध्वस्त करके मस्जिद का निर्माण कर दिया। इसी को अयोध्या विवाद के रूप में जाना जाता है।[20]

अयोध्या के सिंहासन पर 59 राजा शोभित हुये।[21] अयोध्या भारतवर्ष यानि जम्बूद्वीप में रामायण, महाभारत युग की विख्यात प्राचीन नगरी है जो दाशरथी राम की

राजधानी है। श्री राम ने लंका विजय के बाद प्रजा के लिये शासन किया। यह (अयोध्या) इक्ष्वाकु राजा द्वारा बसाया हुआ श्रेष्ठ जनपद है।[22]

श्री राम की जन्मभूमि के लिये कहा गया है कि– यह चक्रों वाली अर्थात् आठ आवरणों वाली है और नवद्वारों (नौ द्वारों) वाली है तथा दिव्य गुणों से युक्त भक्तिप्रपत्ति सम्पन्न परम भागवत स्वरूप देवों की पुरी अर्थात् स्वर्गलोक के समान है जो देवों द्वारा सेवित है। अमृत से परिपूर्ण उन ब्रह्म की अयोध्या पुरी में दिव्य ज्योतियों से आवृत (घिरी हुयी) स्वर्ग कोश है।[23] अर्थात् अयोध्या को अमृतमय पुरी कहा है जो आठ आवरणों तथा नौ द्वारों वाली है। यहाँ पर ब्रह्म (श्री राम) को कहा है जो स्वयं अयोध्या में विराजमान हैं।

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्री राम के पूर्ववर्ती सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी अयोध्या रही है। राजा इक्ष्वाकु से लेकर राजा रघु तक सभी चक्रवर्ती राजाओं ने अयोध्या के सिंहासन को शोभित किया है। यह अयोध्या श्री राम जी की अवतार भूमि होने पर साकेत नाम से प्रसिद्ध हुयी थी। यहाँ के कीट–पतंगे तक उनके (श्री राम) दिव्यधाम तक चले गये थे जिससे मानो अयोध्या पहली बार त्रेतायुग में ही उजड़ गयी थी। अर्थात् जब श्री राम अपने मानवावतार को त्याग कर अपने दिव्य धाम को लौटे तब उनके साथ सभी अयोध्यावासी, कीट–पतंगे तक उनके साथ उनके धाम को चले गये थे जिससे अयोध्या शून्य हो गयी थी जिसको पुनः श्री राम के पुत्र कुश ने बसाया था।

अयोध्या के पुरातन इतिहास से पता चलता है कि अयोध्या को वर्तमान में महाराज विक्रमादित्य ने बसाया था।[24]

निष्कर्ष

अतः हमें श्री राम जन्मभूमि अयोध्या के बारे में जानकारी प्राप्त होती है कि अयोध्या नगरी को अथर्ववेद में देवताओं का स्वर्ग बतलाया गया है अर्थात् इसे ईश्वर का नगर बताते हुये स्वर्ग से इसकी तुलना की गयी है। यहीं पर भगवान् श्री राम का जन्म हुआ है इसीलिये इसे श्री राम जन्मभूमि कहा जाता है। सरयू नदी के तीर पर अवस्थित अयोध्या जो सप्तपुरियों में से एक है और मोक्षदायिनी है। यहाँ पर इक्ष्वाकु वंश के अनेक वीर योद्धाओं ने जन्म लिया जिनमें से श्री राम, भगवान् विष्णु के अवतार में से एक थे। आयुध अर्थात् शस्त्रों द्वारा वीरों के पराक्रम के लिये जानी जाने वाली अयोध्यापुरी श्री राम जन्मभूमि के नाम से सर्वत्र विख्यात है।

Endnotes:

[1] संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिव राम आप्टे, पृष्ठ 854।
[2] हलायुध कोश, सम्पादक, जयशंकर जोशी, पृष्ठ 566।
[3] श्रीविष्णुसहस्त्रनाम, सानुवाद शांकर भाष्य सहित, पृष्ठ 143।
[4] बृहद्धातुकुसुमाकर, पृष्ठ 216।
[5] लघुसिद्धान्तकौमुदी, पृष्ठ 130।
[6] वही, अजन्तपुलिंग प्रकरण, पृष्ठ 135।
[7] तस्मात् सुस्त्राव सरसः सायोध्यामुपगूहते। सरः प्रवृत्ता सरयूः पुण्या ब्रह्मसरश्च्युता।। तस्यायमतुलः शब्दो जाह्नवीमभिवर्तते। वारिसंक्षोभजो राम प्रणामं नियतः कुरु।। रामायण, बालकाण्ड, 20.9–10।
[8] शब्दकल्पद्रुम, भाग–4, पृष्ठ 117।
[9] अमरकोश, द्वितीय काण्ड, पुरवर्ग, पृष्ठ 61।
[10] अयोध्यामनुराजधानीम् । रघुवंश, सर्ग 13.61।
[11] वयं युद्धादिहैष्यामो रुधिरेण समुक्षिताः। विदार्य स्वतनुं बाणै राममाङ्कितैः शरैः।। रामायण, युद्धकाण्ड, 64.25; महाभारत, कर्णपर्व, 48.39; हरिवंश पुराण, 11. 5–7।
[12] रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 27।
[13] विमानमिव सिद्धानां तपसाधिगतं दिवि ।
सुनिवेशितवेश्मान्तां नरोत्तमसमावृताम्।। वही, बालकाण्ड, सर्ग 5, 19।
[14] सा योजने द्वे च भूय सत्यनामा प्रकाशते। यस्यां दशरथो राजा वसञ्जगदपालयत्।। वही, बालकाण्ड, सर्ग 5, 26।
[15] नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु। ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह।। प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकनमस्कृतम्। कौसल्याजनयद् रामं दिव्यलक्षणसंयुतम्।। वही, बालकाण्ड, 18.9–10।
[16] पौराणिक कोश, लेखक, राणा प्रसाद शर्मा, पृष्ठ 511।
[17] वही, पृष्ठ 512।
[18] महाभारत, आदिपर्व, 169.20–21।
[19] पौराणिक कोश, लेखक राणा प्रसाद शर्मा, पृष्ठ 445।
[20] जिम्मी सिंह कुशवाहाः हिस्ट्रीकल परस्पेक्टिव ऑफ राम जन्म भूमिः अध्याय 2, पृ. 8।
[21] प्राचीन भारत का इतिहास, पृष्ठ 240।
[22] भारतीय संस्कृति कोश, (भाग–1), पृष्ठ 57।
[23] अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या। तस्याँ हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।। अथर्ववेद, 10.31।
[24] कल्याण तीर्थांक, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 205।